विषय : मुझे जो कहना था

मुझे तो उड़ना है।

जब छोटी थी मैं, फूलों से,
भरी हुई थी ज़िंदगी।
एक तितली की तरह उड़ रही थी,
मैं आज़ादी की आसमान में।

भाई-बहनों के साथ खेलके,
उनको चिढ़ाके बड़ी हुई।
सब बदल गया अचानक,
काले बादलें भर ~~आ~~ गया।

प्यार-भरी बातें बदली,
दबाव की आवाज़ होने लगी।
"ऐसा मत बैठो" - "आवाज़ ऊँचा मत करो"
जैसे सलाहें सुनाई देने लगी।

धीरे-धीरे महसूस हुआ,
जैसे एक पिंजरे में बंद हूँ।
जब भाईयों की मस्ती थी कायम,
ताला लगाया गया, मेरी जीवन में।

वह मासूम आप में मैरे,
लोगों को शादी की फिक्र थी मेरी।
मिलाया कई अंजानों से मुझे,
चुना गया किसी को मैरे लिए।

कोई पढ़ाई की बात मेरी न की,
कोई नौकरी की बात तक न की।
बस किसी अमीर से
मेरी शादी तै की।

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 641 Participant Code: 110

सुनने को तैयार न थी कोई,
वह, जो मुझे ~~कहन~~ कहना था।
मेरा मुँह बंद करके,
तैं किए सबने, मेरी दिशा।

पढ़ाई छोड़ने से और,
घर संभालने से,
खुश है हम, ऐसा,
लोगों को लगता है।

लेकिन कौन सुनता है?
मुझे जो कहना है
मुझे तो उड़ना है
अपनी काबीलियत से...

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)